संस्थापित १८९७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● अंक १० ● ०६ मार्च २०१८ चैत्र कृष्ण पक्ष पंचमी संवत् २०७४ ● दयानन्दाब्द १६३ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११८

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० का हरिद्वार में चिन्तन शिविर सम्पन्न–

गरीब एवं पिछड़े वर्ग की आवाज बनें आर्य समाज–स्वामी आर्यवेश

शराब बन्दी आन्दोल पूरे प्रदेश में मुखर करेंगे। –डॉ० धीरज सिंह।

जन आन्दोलन से जुड़ें तथा भावी पीढ़ी को संस्कारित करेंगें। –स्वामी धर्मेशरानन्द सरस्ती।

स्कूल–कालेजों में धर्म शिक्षा अनिवार्य हो। –यतीश्वरानन्द विधायक।

४ मार्च रविवार–आर्य समाज मन्दिर हरिद्वार में २ दिवसीय चिन्तन शिविर निर्विघ्न सम्पन्न हो गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में पधारे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि आर्यसमाज को गरीब एवं पिछडे वर्ग की आवाज बनकर समाज में अपनी पहचान बनानी पड़ेगी, स्वामी श्रद्धानन्द जी का उदाहरण देते हुए उनके निर्माण, त्याग, समर्पण एवं बलिदान की परम्परा से आर्य जनता को परिचित कराया।

दीपावली एवं शिवरात्रि पर्व पर सत्यार्थ प्रकाश एवं ऋषि जीवनी भेंट करने की प्रेरणा देते हुए गीता प्रेस गोरखपुर का उदाहरण दिया सस्ते मूल्य पर साहित्य का प्रकाशन किया जाये। ट्रेक्ट बांटे जायें जाति प्रथा, छूआछूत, बालविाह अनमेल विवाह तथा दासी, देवदासी प्रथा का विरोध करते हुए आर्य समाज को अब समाज में फैली कुरीतियों का खुलकर विरोध करने के लिए संकल्प लेना होगा आपने आपने आह्वान करते हुए प्रत्येक ईकाई को संगठित होकर आन्दोलन चलाने की प्रेरणा प्रदान की। विशिष्ट अतिथि के रूप में हरिद्वार से विधायक युवा सन्यासी स्वामी यतीश्वरानन्द ने अपने उद्बोधन में आर्य समाज हरिद्वार के संघर्ष की कहानी की चर्चा करते हुए कहा कि आज प्रदेश में हजारों शिक्षण संस्थाओं में पढ़ने वाले छात्र/छात्राओं को धर्म शिक्षा देनी अनिवार्य होनी चाहिए। उनकी धार्मिक परीक्षायें ली जायें वैसा ही पाठ्यक्रम तैयाकर करें धर्म शिक्षकों की नियुक्ति की जाये आर्य समाज के सन्यासी, उपदेशक प्रत्येक विद्यालयों में समय–समय पर जाकर उन्हें महर्षि दयानन्द के जीवन के प्रेरणाप्रद सन्दर्भ सुनाकर आर्य समाज ने देश के लिए जो आन्दोलन चलाकर धर्म की रक्षा की है प्रेरक प्रसंगों से आर्य विद्यालयों में छात्रों में अच्छे संस्कार प्रदान किया जाये तो कम खर्च में आर्य समाज का बहुत बड़ा कार्य सम्पन्न हो सकता है बच्चों में चरित्र निर्माण शिविर की योजना बनाई जाये।

सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी ने बताया कि आर्य समाज प्रारम्भ से ही संसार का उपकार करता हुआ शारीरिक बल बढ़ाने एवं आत्मिक शान्ति के लिए योजना तेयार करता है फिर सामाजिक उन्नति द्वारा महर्षि के विचारों को जन आन्देलन बनाता रहा है हैदराबाद आन्दोलन हिन्दी रक्षा आन्दोलन गोरक्षा आन्दोलन, सत्यार्थ प्रकाश रक्षा आन्दोलन, शराब बन्दी आन्दोलन बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं आन्दोलन आर्य समाज ने चलाये हैं तथा उससे सामाजिक चेतना जागृत करके कुरीतियों और पाखण्डों को सदा से आर्य समाज दूर करता रहा है। आज फिर समय की माँग है शराब बन्दी आन्दोलन द्वारा पूरे प्रदेश में जन चेतना यात्रा द्वारा वातावरण बनाया जायेगा जब तक पूर्ण रूप से शराब बन्द नहीं होती तब तक यह आन्दोलन चलता रहेगा, आपने पिछले वर्षों की चर्चा करते हुए बताया था कि प्रदेश सरकार पर दबाव दिया जायेगा हस्ताक्षर अभियान चलाया जा रहा है प्रदेश संयोजक सभा उपप्रधान ज्ञानेद्र गाँधी जी के संयोजन में जिला समितियां गठित की जा रही हैं शीघ्र ही पूरे प्रदेश में इसे क्रियान्वित किया जायेगा। सभा प्रधान जी ने स्वामी आर्य वेश जी के पधारने का भी विशेष धन्यवाद किया। उन्होंने प्रत्येक प्रदेशीय आर्य को इस आन्दोलन को सफल बनाने की प्रेरणा प्रदान की।

सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने सभा का सफल संयोजन किया तथा भावी पीढ़ी को संस्कारित करने पर बल दिया। आपने बताया कि यदि परिवार की सुरक्षा करनी है तो पत्र को सुपुत्र बनाओ यदि समाज की रक्षा करनी है तो आर्य समाज बनाओ, आर्य समाज की रक्षा करनी है तो फिर सभी अपनी–अपनी समाज में आर्यवीरदल की स्थापना करो, भावी पीढ़ी को इस दिशा में लाने के लिए शिक्षा संस्कार, संस्कृति, संस्कृत, यज्ञ, योग से जोड़ना होगा जो आर्यवीरदल ही कर सकता है प्रत्येक आर्य समाज में शखा लगे, प्रत्येक जिले में शिविर लगें इसे जन आन्दोलन बनाकर ग्राम–ग्राम, नगर–नगर में सक्रियता सदस्यता रूप में जिला सभा के उपप्रधान, मन्त्री, कोषाध्यक्ष, संचालक, अधिष्ठाता, गम्भीरता पूर्वक जिला सभा को सुदृढ़ करें। प्रत्येक इकाई को सक्रिय करेंगे तभी कार्यकर्ता तैयार होंगे जो आन्दोलन को सफल बना सकते हैं। सभा उपप्रधान श्री ज्ञानेन्द्र गाँधी जी ने जिला मुरादाबाद की प्रगति आख्या में बताया कि प्रतिवर्ष ५०० आर्यवीरों का शिविर लगाते हैं, प्रचार–प्रसार करते है जिला सभा में युवा टीम काम कर रही है इसी प्रकार प्रत्येक जिले में युवाओं को लाने के लिए योजना तैयार की जाये उनके जिला अध्यक्ष अजब सिंह आर्य ने भी इसी बात की पुष्टि करते हुए आह्वान किया कि पूरा प्रदेश मुरादाबाद की तरह काम करेगा तो शीघ्र ही महर्षि दयानन्द जी के सपने साकार हो सकते है। इसी प्रकार सहारनपुर से प्रियव्रत शास्त्री जी ने सहानपुर जिले की प्रगति आख्या प्रस्तुत की और आन्दोलन को सफल बनाने के लिए संकल्प लिया अवनीश आर्य मन्त्री ने भी इसका समर्थन किया। गौतमबुद्ध नगर के जिला सभा प्रधान वीरेश आर्य ने यज्ञ द्वारा संस्कार तथा शिक्षा देने पर बल दिया गुरूकुलों द्वारा भी हमें सफलता मिलेगी श्री बिजेन्द्र सिंह आर्य, श्री मा० ज्ञानेन्द्र सिंह म० तेजपाल सिंह ने भी अपने विचारों द्वारा आन्दोलन को सफल बनाने का संकलप लिया. श्री मा० ज्ञानेन्द्र सिंह जिला सभा गाजियाबाद के अध्यक्ष एवं प्रदेश में

शेष पृष्ठ ४ पर

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

होली का सन्देश

होली का पावन पर्व आ गया, न केवल प्रकृति में अपितु मानव जीवन और राष्ट्र के जीवन में भी होली (बसन्त ऋतु) का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है। इस प्रभाव को हम अपने व्यवहार में कैसे लावें, इसीलिए पर्व की योजना की जाती है।

प्रकृति के प्रसाद, अन्न की परिपश्वता से बढ़कर किसी के लिए आहलाद, प्रह्लाव का विषय और क्या हो सकता है, परन्तु प्रकृति के इस प्रह्लाद को सत्ता के हिरण्यकश्यपु (सोने के पलंग) ने आतंकित, पीड़ित और प्रताड़ित किया। हुआ है। समस्त विश्व की मानवता राजनीतियों के सत्ता संघर्ष और उन्नाव के कारण भयाकाश्त और निरूपाय बनी निराशा का जीवन व्यतीत कर रही है, अणु शस्त्रों के निर्माण, विकास और आतंक से मानव जाति के भविष्य के लिए विनाश का संकट मड़रा रहा है और इसी प्रकार राष्ट्र के जीवन में अधिनायकवाद, आतंकवाद ने प्रजातन्त्र के स्वरूप को विकृत कर दिया है। निर्वाचन की दौड़धूप में सभी अपने को प्रजातन्त्र का पहरेदार बता रहे हैं, मतदाताओं के ह्रदय में उथल-पुथल हैं, कि कौन सच्चा और कौन दिखावटी, इसी प्रकार इस वर्ष की होली एक विशेष अवसर पर लायी है।

विगत को भूलने और नये जीवन की आशाओं को आगे बढ़ाने का संदेश दे रही है। आज मानव जाति के लिए युद्ध भय की समाप्ति ही होली का संदेश है। इसी प्रकार भारत के जीवन में नव-निर्माण का एक नया अध्याय आरम्भ करने की प्रेरणा होली हमें वे रही हैं। क्या हम आशा करें कि मधुमान का संदेश व्यक्तियों और राष्ट्र के जीवन में मधुरता का वातावरण उत्पन्न कर सकेगा।

आर्य समाज होली में वैदिक स्वरूप को नवसस्प्रेष्टि यज्ञ के रूप में मनाता है। यह के साथ-साथ आर्यसमाजों की ओर से होली-मिलन आदि के कार्यक्रम भी आयोजित करने चाहिए। होली में अपशब्दों (गालियों) का प्रयोग, कीचड़ गन्दगी तथा रोगों में गन्दी मिलावट के विरूद्ध व्यापक प्रचार करना चाहिए, पत्रक छपाने चाहिए।

लेकिन आज लोगों ने होली के महत्व को ही समाप्त कर डाला उस जमकर शराब पीनी जुआ खेलना और उल्टी सीधी गलियां बकना यह परम्परा बन गई है।

हमारी संस्कृति के सारे पर्व हमारे जीवन में प्रसन्नता का प्रतीक बनकर आते हैं। यदि हम निराश हैं तो उसे प्रसन्न तो अवश्य ही होना चाहिए लेकिन आज ऐसे पर्व को भी निराशा में बदल दिया। आज लोगो के अन्दर भय पैदा हो गया है इन पर्वों को लेकर कि कहीं कोई दुर्घटना न हो जाय। लोग इस दिन अत्यधिक शराब और भांग का सेवन करते कई जगह से फेसबुक और वाट्सऐप पर पिच्चर आयी उसमें ऐसे सज्जनों को देखा गया जहां होली में इतनी शराब पी की नाली में कीचड़ फेकने लगे और उससे भी मन नहीं भरा तो कीचड़ खाने लगे। यही दुसरी घटना मझोला पीलीभीत उ0प्र0 की घटना है जहां दो नौजवान शराब पीकर इतने मस्त हो गये कि मझोला शरदा नहर में गहराई में नहाने का फैसला कर लिया जबकि तैरना नहीं आता था और नशे की हालत में शरदा नहर में पुल के ऊपर से छलांग लगा दी और हमेशा के लिए भगवान के प्यारे हो गये। घर में मातायें इस होली को लेकर भयभीत रहती हैं कि कोई गलत रंग न लगा दे जिससे त्वचा में इन्फेक्सन हो जाय आज इतने सुन्दर पर्व होली को इतना भयानक रूप दे दिया है। यह होली का पर्व हमारी खुशहाली का पर्व है यह होली का पर्व हमारी उन्नती का प्रतीक है।

यदि हमने इसी तरह से पर्वों को मनाना बन्द नहीं किया तो इसका परिणाम भी भुगतने के लिए तैयार रहना होगा आइए हम सब एक संकल्प लेवे कि हम अपनी वैदिक सांस्कृतिक के अनुसार ही होली मनावे का प्रयास करें जिसका संदेश पूरे विश्व में पहुचें।

होली मानव-मात्र के लिए प्रेम, श्रद्धा और कर्म भावना का सन्देश दे रही है। हम इस सन्देश को अपने और राष्ट्र के जीवन में धारण करें तभी हमारे व्यक्तिगत और राष्ट्रीय जीवन में अहलाद-प्रह्लाद बढ़ेगा, और हिरण्यकश्यपु धन की सत्ता का नाश होगा। आज समाजवाद की पृष्ठिभूमि में आर्थिक संघर्ष ही सेंध्याप्त है। उसे समाप्त कर हमें नैतिक जीवन के उत्कर्ष का सन्देश देना होगा, तभी विश्व भी भयमुक्त हो एक विश्व की महान् अनुभूति कर सकेगा। – सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ पञ्चम समुल्लासारम्भः

अथ वानप्रस्थसंन्यासविधिं वक्ष्यामः

यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञस्तद्यच्छेद् ज्ञान आत्तनि। ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेत्तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि।।
–मुण्ड० वल्ली ३। मं०१३।।

संन्यासी बुद्धिमान् वाणी और मन को अधर्म से रोके। उन को ज्ञान और आत्मा में लगावे और उस ज्ञान, स्वात्मा को परमात्मा में लगावे और उस विज्ञान को शान्तस्वरूप आत्मा में स्थिर करे।

परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान् ब्राह्मणो निर्वेदमायान्नास्त्यकृतः कृतेन।
तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्।।
–मुण्ड० खण्ड २। मं० १२।।

सब लौकिक भोगों को कर्म से सञ्चित हुए देख कर ब्राह्मण अर्थात् संन्यासी वैराग्य को प्राप्त होवे। क्योंकि अकृत अर्थात् न किया हुआ परमात्मा कृत अर्थात् केवल कर्म से प्राप्त नहीं होता। इसलिये कुछ अर्पण क अर्थ हाथ में ले के वेदवित् और परमेश्वर को जानने वाले गुरू के पास विज्ञान के लिए जावे। जाके सब सन्देहों की निवृत्ति करे। परन्तु सदा इन का संग छोड़ देवे कि जो–

अविद्यायामन्तरे वर्त्तमानाः स्वयं धीराः पण्डितम्मन्यमानाः।
जङ्घन्यमानाः परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः।।१।।
अविद्यायां बहुधा वर्त्तमाना वयं कृतार्था इत्यभिमन्यन्ति बालाः।
यत्कर्मिणो न प्रवेदयन्ति रागात्तेनातुराः क्षीणलोकाश्च्यवन्ते।।२।।
–मुण्ड० १। खण्ड २। मं० ८। ६।।

जो अविद्या के भीतर खेल रहे, अपने को धीर और पण्डित मानते हैं, वे नीच गति को जानेहारे मूढ़ जैसे अन्धे के पीछे अन्धे दुर्दशा को प्राप्त होते हैं वैसे दुःखों को पाते हैं।।१।। जो बहुधा अविद्या में रमण करने वाले बालबुद्धि हम कृतार्थ हैं ऐसा मानते हैं, जिस को केवल कर्मकाण्डी लोग राम से मोहित होकर नहीं जान और जना सकते, वे आतुर होके जन्म मरणरूप दुःख में गिरे रहते हैं।।२।। इसलिये–

वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थाः संन्यासयोगाद्यतयः शुद्धसत्त्वाः।
ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले परामृताः परिमुच्यन्ति सर्वे।। –मुण्ड– ३ खण्ड २। मं० ६।।

जो वेदान्त अर्थात् परमेश्वर प्रतिपादक वेदमन्त्रों के अर्थज्ञान और आचार में अच्छे प्रकार निश्चित संन्यासयोग से शुद्धान्तःकरण संन्यासी होते हैं, वे परमेश्वर में मुक्ति सुख को प्राप्त हो, भोग के पश्चात् जब मुक्ति में सुख की अवधि पूरी हो जाती है तब वहां से छूट कर संसार में आते हैं। मुक्ति के बिना दुःख का नाश नहीं होता। क्योंकि–

न सशरीरस्य सतः प्रियाप्रिययोरपहतिरस्त्यशरीरं वाव सन्तं न प्रियाप्रियेस्पृशतः।।

जो देहधारी है वह सुख दुःख की प्राप्ति से पृथक् कभी नहीं रह सकता और जो शरीररहित जीवात्मा मुक्ति में सर्वव्यापक परमेश्वर के साथ शुद्ध होकर रहता है, तब उस को सांसारिक सुख दुःख प्राप्त नहीं होता। इसलिये–

लोकैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च पुत्रैषणायाश्चोत्थायाथ भैक्षचर्यं चरन्ति।। –शत० कां १४।।

लोक में प्रतिष्ठा वा लाभ धन से भोग वा मान्य पुत्रादि के मोह से अलग हो के संन्यासी लोग भिक्षुक हो कर रात दिन मोक्ष के साधनों में तत्पर रहते हैं।

प्राजापत्यां निरूप्येष्टि तस्यां सर्ववेदसं हुत्वा ब्राह्मणः प्रव्रजेत्।।१।। –यजुर्वेदब्राह्मणे।।
प्राजापत्यां निरूप्येष्टिं सर्ववेदसदक्षिणाम्। आत्मन्यग्नीन्समारोप्य ब्राह्मणः प्रवजेद् गृहात्।।१।।
यो दत्वा सर्वभूतेभ्यः प्रव्रजत्यभयं गृहात्। तस्य तेजोमया लोका भवन्ति ब्रह्मवादिनः।।२।। मनु०।।

प्रजापति अर्थात् परमेश्वर की प्राप्ति के अर्थ इष्टि अर्थात् यज्ञ करके उस में यज्ञोपवीत शिखादि चन्हों को छोड़ आहवनीयादि पांच अग्नियों को प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान इन पांच प्राणों में आरोपण करके ब्राह्मण ब्रह्मवित् घर से निकल कर संन्यासी हो जावे।।१।। जो सब भूत प्राणिमात्र को अभयदान देकर घर से निकल के संन्यासी होता है उस ब्रह्मवादी अर्थात् परमेश्वर प्रकाशित वेदोक्त धर्मादि विद्याओं के उपदेश करने वाले संन्यासी के लिये प्रकाशमय अर्थात् मुक्ति का आनन्दस्वरूप लोक प्राप्त होता है।।२।।

(प्रश्न) सन्यासियों का क्या धर्म है।

(उत्तर) धर्म तो पक्षपातरहित न्यायाचरण, सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग, वेदोक्त ईश्वर की आज्ञा का पालन, परोपकार, सत्यभाषणादि लक्षण सब आश्रमियों का अर्थात् सब मनुष्यमात्र का एक ही है, परन्तु संन्यासी का विशेष धर्म यह है कि–

दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं जलं पिबेत्। सतयपूतां वदेद्वाचं मनःपूतं समाचरेत्।।१।।
कुद्धयन्तं न प्रतिकुध्येदाक्रष्टः कुशलं वदेत्। सप्तद्वारावकीर्णां च न वाचमनृतां वदेत्।।२।।
अध्यात्मरतिरासीनो निरपेक्षो निरामिषः। आत्मनैव सहायेन सुखार्थी विचरेदिह।।३।।
क्लृप्तकेशनखश्मश्रुः पात्री दण्डी कुसुम्भवान्। विचरेन्नियतो नित्यं सर्वभूतान्यपीडयन्।।४।।
इन्द्रियाणां निरोधेन रागद्वेषक्षयेण च। अहिंसया च भूतानाममृतत्वाय कल्पते।।५।।
दूषितोऽपि चरेद्धर्मं यत्र तत्राश्रमे रतः। समः सर्वेषु भूतेषु न लिङ्गं धर्मकारणम्।।६।।
फलं कतकवृक्षस्य यद्यप्यम्बुप्रसादकम्। न नामग्रहणादेव तस्य वारि प्रसीदति।।७।।
प्रणायामा ब्राह्मणस्य त्रयोऽपि विधिवत्कृताः। व्याहृतिप्रणवैर्युक्ता विज्ञेयं परमं तपः।।८।।
दह्यन्ते ध्यायमानानां धातूनां हि यथा मलाः। तथेन्द्रियाणं दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात्।।९।।
प्राणायामैर्दहेद्दोषान् धारणाभिश्च किल्विषम्। प्रत्याहारेण संसर्गान् ध्यानेनानीश्वरान् गुणान्।।१०।।
उच्चावचेषु भूतेषु दुर्ज्ञेयामकृतात्मभिः। ध्यानयोगेन सम्पश्येद् गतिमस्यान्तरात्मनः।।११।।
अहिंसयेन्द्रियासङ्गैर्वैदिकैश्चैव कर्म्मभः। तपसश्चरणैश्चोग्रैस्साधयन्तीय तत्पदम्।।१२।।
यदा भावेन भवति सर्वभावेषु निःस्पृहः। तदा सुखमवाप्नोति प्रेत्य चेह च शाश्वतम्।।१३।।
चतुर्भिरपि चैवैतैर्नित्यमाश्रमिभिर्द्विजैः। दशलक्षणको धर्मः सेवितव्यः प्रयत्नतः।।१४।।
धृतिः क्षम दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः। धीर्विद्या सत्यमक्रधो दशकं धर्मलक्षमणम्।।१५।।
अनेन विधिना सर्वांस्त्यक्त्वा सङ्गाञ्छनैः शनैः। सर्वद्वन्द्वविनिर्मुक्तो ब्रह्मण्येवावतिष्ठते।।१६।।
– मनु० अ० ६।।

क्रमशः

धरोहर....

आर्य जगत् के जाज्वल्यमान नक्षत्र–

डॉ० विश्वपाल प्राचार्य

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ६८३७४०२१६२

विद्याविलास मनसो धृतशील शिक्षा,
सत्यव्रता रहित मान मलापहारा।
संसार दुःख दलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहित कर्म परोपकारः।।

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती द्वारा रचित श्लोक के आधार पर वे लोग धन्य हैं जो सदैव परोपकार वृत्ति द्वारा संसार का दुख दूर करने के लिए अपने मान अपमान से ऊपर उठकर सदैव विद्या विलासी बनकर शिक्षा और संस्कारों से भावी पीढ़ी का निर्माण करने में ही अपने जीवन का सदुपयोग करते रहते हैं ऐसे ही दिव्य गुणों से मुक्त थे हमारे अनुज भ्राता वैदिक विद्वान, समाजसेवी, संघर्षशील व्यक्तित्व हिन्दी साहित्य के अन्वेशक, संस्कृत, व्याकरण में कृतक्षी, परिश्रम, वेदों के पारखी, हस्तलेख के धनी, विद्वानों के चरणानुगामी सरलता, सौम्यता की प्रतिमूर्ति, गुरूकुल परम्परा के गौरव, सादा जीवन उच्च विचारों के प्रचारक, संस्कृतभाषा के उन्नायक, संस्कार और संस्कृति के परिषेक्ता, आचार्य विश्वपाल आर्य प्राचार्य किसान पी०जी० कालेज सिम्भावली जि० हापुड़ (उ०प्र०) अचानक हमें आध्यात्मिक दुःख से अभिसिंचत कर स्वर्गलोक वासी बन गए उनका अभाव आर्यजगत एवं शिक्षाजगत के लिए अपूरणीय क्षति हैं प्रत्येक परिचित आत्मीयजन इस संवेदना से व्यथित है उनके परिचय और उनके प्रति अपनी श्रद्धा की अभिव्यक्ति कर भावी पीढ़ी को भी कुछ प्रेरणा मिल सके इसलिए कुछ पंक्तियां उनके लिए समर्पित कर रहा हूँ।

डॉ० विश्वपाल जी आचार्य एम०ए० मेरे बाल्यकाल से सहाध्यायी रहे हैं, आपका जन्म मेरठ जिले के हस्तिनापुर क्षेत्र राजधानी किला परीक्षितगढ़ को पूर्वदिशा में २ कि०मी० दूरी पर स्थित आलमगीरपुर बढ़ला (१२) ग्राम में हुआ था मा० नारायण सिंह सर्वोदयी नेता एवं समाज सेवी आपके पिता श्री थे आपके जन्म के कुछ मास पश्चात् ही आपकी माता जी का देहान्त हो गया था आपकी नानी हरयाणा के फरीदाबाद जिले के दयालपुर नामक ग्राम में रही वहीं आपका शैशवकाल पूरा हुआ फिर आपकी बुआ जी अटौला ग्राम में ले आईं आपके फुफेरे भाई वीरपाल सिंह आर्य, धार्मिक और समाजिक व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित रहे उन्होंने ही बाल्यकाल में संस्कारों से युक्त किया वहां आर्य समाज का प्रचार एवं उत्सव होते रहते थे उसमें इनकी रूचि बढ़ी पूज्य स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती निवेदतीर्थ गुरूवर के साथ मैं सेवा में स्वामी जी का उपदेश और मेरा योग आसन प्रदर्शन इस बालक के लिए मार्ग दर्शक बना और निश्चय कर लिया कि अब मैं गुरूकुल शिक्षा द्वारा अपना सर्वांगणींण विकास करूंगा, आपके भाई वीरपाल सिंह आर्य से इन्होंने अपनी भावना प्रकट की और पूज्य स्वामी जी की स्वीकृति प्राप्त कर गुरूकुल महाविद्यालय ततारपुर, हापुड़ में बालक का नाम विजय पाल आर्य था उनका प्रवेश हो गया। शारीरिक दृष्टि से कृशकाय विजय पाल आर्य सभी ब्रह्मचारियों के लिए दया का पात्र था लेकिन इनके उत्साह और परिश्रम तथा गुरूकुल के सादे भोजन ने स्वास्थ्य सुन्दर कर दिया पढ़ने में कुशाग्र बुद्धि का लाभ मिला जो भी विषय दिया जाये उसे अविलम्ब स्मरण करके सनाने में उत्साह बढ़ने लगा, व्यायाम की रूचि से जो भाव जागृत हुए उसमें तत्कालीन ब्रह्मचारियों के आदर्श आधुनिक भीम जैसा बनने का मन बनाकर अपना नाम भी ब्र० विश्वपाल आर्य निश्चित करके आचार्य श्री घनश्याम सिंह जी द्वारा प्रवेश पंजिका में भी पुष्ट करा लिया और हाईस्कूल की परीक्षा के आवेदन में उसे ही प्रभावित कर लिया तब से आप विश्वाल आर्य के नाम से ही प्रसिद्धि को प्राप्त हुए जबकि ग्रामवासी आज भी विजय पाल आर्य शास्त्री जी के नाम से ही पुकारते रहे हैं। गुरूकुल म०वि० ततारपुर से माध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण करके कुछ समय आर्यमहाविद्यालय किरषल वर्तमान जि० बागपत में प्रवेश लिया जो उस समय मेरठ जिला ही था। आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान संन्यासी स्वामी वेदानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित गुरूकुल खेड़ा खुर्द दिल्ली में भी कुछ समय तक अध्यपन किया वहीं पर व्याकरण के मूर्धन्य विद्वान् महात्मा देवस्वामी जी के विषय में परिज्ञान हुआ और जिज्ञासु बनकर गुरूकुल म० विद्यालय सिरसागंज मैनपुरी की पुण्यधरा में प्रवेश कर गुरूदेव जी से आशीर्वाद लिया। गुरूदेव महात्मा देव स्वामी सच्चे अर्थों में देवता थे। उनहोंने जो शब्द उस समय मुझे कहे थे वे आज भी अक्षशः स्मरण है ऐसा लग रहा है कि जैसे वे अभी बता रहे हैं आचार्य धर्मेन्द्र जी को गुरूकुल कुम्भाखेड़ा हरयाणा में लाने के लिए स्वामी रतनदेव जी जो मुझे गुरूकुल सिरसागंज भेजा कि आप उन्हें मेरी ओर से संन्देश देना मैं और विश्वपाल आर्य, व्रतपाल आर्य, नरेन्द्र पाल आर्य, वेदपाल आर्य सभी खेड़ा खुर्द, पढ़ने के लिए आचार्य रमेश चन्द्र शास्त्री जी के पवित्र सानिध्य में पढ़ रहे थे आचार्य बब्बन मिश्र जैसे विद्वान् से कादम्बरी का अध्ययन भी हो रहा था घर से समीप भी था महात्मा देव स्वामी जी ने मुझसे कहा बेटा वेदांगों में व्याकरण ही प्रधान अंग है "मुखं व्याकरणं स्मृतम्" इस आयु में यदि इस विषय में सफल प्रयास नहीं किया तो सारी आयु पश्चाताप रहेगा खेड़ा खुर्द रहकर सुख–सुविधायें तो मिल सकती हैं परन्तु ज्ञान के बिना यश नहीं मिलता अतः आपको सिरसागंज ही आना चाहिए था। गुरू जी को बताया था कि हम पांच हैं और पांचों को एक साथ रहना हैं वहां हमें भोजन शुल्क से भी मुक्ति हैं दूध की व्यवस्था है घृत घर से ले आते हैं तथा गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से विद्याभास्कर कक्षा में भी प्रवेश लिया हुआ है वहां जाने में भी सुविधा रहती हैं आप यदि उक्त सुविधाओं में सहयोगी बने तो मैं अपने उन साथियों को आश्वस्त करके साथ ला सकता हूँ इतना सुनकर गुरूदेव में वात्सल्य भाव जागृत हो गया था। उन्होंने कहा आचार्य धर्मेन्द जी तथा आचार्य घनश्याम सिंह आचार्य अनिल कुमार जी मेरे शिष्य रहे हैं जिनसे आपने बचपन में प्रथमावृत्ति एवं साहित्य पढ़ा है अब योग्यता चाहते हो तो सीधे चले आओ यहाँ तुम्हें वह स्नेह मिलेगा जो सभी शिष्य गुरूजनों से अपेक्षा करते हैं वही शब्द हृदय को छा गए थे और जब खेड़ाखुर्द जाकर सभी को बताया तो जैसे पूर्व परिचय हो सहसा सारे एकदम चलने को तैयार हो गए थे आचार्य जी रमेश चन्द्र जी का स्नेह म० देव स्वामी जी की तुलना में उन्हें छोटा लगने लगा और भविष्य की कल्पनाओं में इतिहास बनाने के लिए कि जिनके पवित्र चरणों में स्वामी इन्द्रवेश जी आचार्य बलदेव जी को भी गुरूकुल झज्जर छोड़कर यहां व्याकरण पढ़ने के लिए स्वामी ओमानन्द जी का स्नेह छोड़ना पड़ा था कुछ खोकर पाना पड़ता है और कुछ पाकर खोना पड़ता है माता–पिता जी की भी आज्ञा नहीं ली उनका क्रोध भी सहन करना पड़ेगा पर महात्मा जी के समक्ष सब हथियार ढ़ीले पड़ जायेंगे। यह सोचकर सभी गुरूकुल खेड़ा खुर्द से सीधे दीपावली के अवकाश के पश्चात् पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से कानपुर की गाड़ी द्वारा शिकोहाबाद उतरकर गुरूकुल सिरसागंज आये थे ५ ब्रह्मचारी मेरठ से आये है पूरे गुरूकुल में हर्ष एवं विस्मय था ५ पाण्डवों की तरह मानों गुरू द्रोणाचार्य रूपी महात्मा देव स्वामी जी से आशीर्वाद ले रहे थे और मुझे बड़ा होने के नाते युधिष्ठर जी व्रजपाल जी भीम विश्वपाल आर्य जी को अर्जुन तथा शेष दो नकुल सहदेव की तरह ही मिलकर रहते थे मेरठ मण्डली हस्तिनापुर क्षेत्र परीक्षित गढ़–भवाना क्षेत्र का प्रभाव उनकी वाणी पर स्पष्ट दिखाई देने लगा था वहां की व्यवस्था सम्बन्धी नियन्त्रण भी कुछ ही दिनों में गुरूदेव के आशीर्वाद से प्राप्त हो गया था और चर्चा होने लगी थी कि गुरूजी तो मेरठ वालों को अधिक महत्व प्रदान करते हैं उनका मूल कारण सेवा सुश्रुषा के साथ समर्पण एवं योग्यता भी थी। श्री विश्वपाल जी आर्य में कुशाग्र बुद्धि का प्रभाव स्पष्ट हो गया था जो एक चर्चा का विषय था कि इस छात्र को पूरा मेघदूत खण्डकाव्य कण्ठस्थ हैं। कादम्बरी कथामुख का प्रारम्भिक भाग शूद्रक राजा का वर्णन वैशम्पायन का वर्णन अगस्त ऋषि का आश्रम वर्णन शिवराज विजय का सोमदेव मन्दिर लूट का वर्णन सभी प्रकरण कण्ठस्थ कर लिए थे अष्टाध्यायी महाभाष्य व्याकरण का नवाहिक प्रकरण का प्रथम आह्नक कण्टस्थ कर लिया था। काशिका गुरू जी स्वयं पढ़ाया करते थे उसके बाद भी बुलाकर प्रकरण लगवाया करते थे वे मानते थे कि विद्या फलवती हो रही है उस कार्यकाल में मुझे तथा विश्वपाल आर्य को छात्रसभा में गुरूदेव द्वारा अध्यक्ष एवं मन्त्री पद पर भी सम्मान प्राप्त हुआ था कुछ पूर्व छात्रों में ईर्ष्या–द्वेष भी जागृत हो गया था रवीन्द्र, प्रमोद आचार्य एवं वेद प्रकाश आर्य जो वर्तमान में अमेठी इण्टरकालेज में प्राचार्य हैं देशबन्धु म०प्र० में प्राचार्य हैं प्रमोद जी कासंगज में प्राचार्य हैं सभी के स्नेह द्वारा मधुरता की वृद्धि होती रही विश्वपाल आर्य जी ने अध्यक्ष बनकर छात्रों पर अपना प्रभाव योग्यता अर्जित करने हेतु भाषण प्रतियोताओं को सूत्रपात प्रत्येक मास प्रारम्भ कर दिया था उससे छात्रों में भाषण तैयार करने और

शेष पृष्ठ ४ पर

पृष्ठ १ का शेष

गरीब एवं पिछड़े वर्ग की आवाज बनें .....

सभा उपमन्त्री हैं। स्कूलों में धर्म शिक्षा भी देते हैं। श्री यशपाल सिंह आर्य एवं सत्यप्रकाश आर्य सुलतानपुर जिले की ओर से आन्दोलन को सफल करने की योजना बनाते हुए पूरा समर्थन किया। शोभित आर्य गुरूकुल कांगड़ी, रूद्रपाल सिंह आर्य ने बिजनौर जिले की ओर से पूरा समर्थन किया आपने बताया कि मेरे साथ ३५ कार्यकार्ता अधिकारी आये हैं जिसमें पहलवान पवन चौ०, दिलावर सिंह, अमन सिंह आर्य आदि–आदि हैं आन्दोलन में पूरा साथ देंगे।

बागपत जिला सभा के मन्त्री रिपुदमन आर्य एवं राजेन्द्र सिंह शिविर में बुलन्दशहर, हापुड़, मुरादाबाद, बिजनौर, मु०नगर, गा०बाद, मेरठ, बागपत, गौतमबुद्ध नगर, सुलतानपुर गाजीपुर, हरिद्वार, सम्भल, अमरोहा, लखनऊ, देहरादून, वराणसी, गोण्डा, बहराइच आदि–आदि जिला सभाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया दयाशंकर आर्य श्री जयप्रकाश भारती जिला हरिद्वार के प्रधान हाकम सिंह रूड़की म० धर्म सिंह म० कल्याण सिंह आर्य के प्रभावशाली भजन हुए यज्ञशालाओं में सुन्दर यज्ञ की व्यवस्था रही ब्रह्मा स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती सभा मन्त्री जी रहे। आर्य समाज के प्रबन्धक श्री वीरेन्द्र सिंह पवार ने उनके सहयोगी धर्मेन्द्र आर्य ने सभी का अतिथियगण किया सुन्दर आवास भोजन व्यवस्था रही सभा उनका धन्यवाद करती है सभा प्रधान डा० धीरज सिंह जी ने प्रदेश से आये समस्त आर्यजनों तथा अधिकारियों का धन्यवाद किया दूसरे दिन भी प्रभावशाली सत्र रहा प्रथम दिन २ सत्रों में चला शिविर सफल रहा सभा कार्यालय प्रभारी श्री कृष्णमुरारी जी, भुवनेश पाठक जी, आशुतोष चौहान पूरे समय शिविर में रहकर व्यवस्थायें देखी हरीश कुमार शास्त्री जी भी व्यवस्था में सहयोगी रहे।

बेटी बचाओं– बेटी पढ़ओं कार्यक्रम का नारा भी आर्य सम्मेलन ने ही दिया था आज हमारे प्रधान मन्त्री जी उसे क्रियान्वित कराने का आग्रह जनता से कर रहे हैं यह आर्य समाज की ही विजय है इस विषय में हरयाणा के मुख्यमंत्री जी ने पूनम आर्या और प्रवेश आर्या को सरकार की ओर से विशेष रूप से सम्मानित किय गया उन्होंने सम्मान के बाद कहा कि यह महर्षि दयानन्द और आर्य समाज का सम्मान है। कार्यक्रम के दूसरे दिन चिन्तन शिविर के द्वितीय दिवस पर अनेक आर्य समाजो के पदाधिकारियों ने भाग लिया आर्यप्रतिनिधि सभा उ०खण्ड के प्रधान श्री गोविन्द सिंह भण्डारी जी ने अपने उद्बोधन में आर्य समाज को संगठित होकर अपनी सम्पत्तियों को जो पर्वतीय क्षेत्रों में खाली पड़ी है उस पर विचार करके आर्य समाज का केन्द्र बनाना चाहिए। जिससे स्थानीय लोगों को लाभ मिल सके श्री गोविन्द सिंह भण्डारी जी ने सभा प्रधान जी को चिन्तन शिविर की सफलता की बधाई दी और कहा यह एक अच्छी पहल है जहाँ आर्य समाज के प्रचार के लिए मील का पत्थर साबित होगा।

चिन्तन शिविर में सभी ने अपने विचार रखे, दिलावर सिंह जी बिजनौर, बिजेन्द्र सिंह जी बिजनौर, श्री शत्रुधन मौर्या देहरादून, जितेन्द्र तोमर देहरादून, रामनारायण शास्त्री बाराबंकी जी ने भजन प्रस्तुत किया, प्रदीप कुमार आर्य प्रधान सम्भल, महेश चन्द्र आर्य बहजोई आदि महानुभावों ने अपना उद्बोधन किया, कार्यक्रम का संयोजन कर रहे वीरेन्द्र पवार जी के संयोजन बड़े ही सुन्दर और सरल ढंग से प्रस्तुत किया, कार्यक्रम के समापन पर सभा प्रधान जी ने सभी आर्यजनों का धन्यवाद प्रस्तुत किया और अग्रिम कार्यक्रम की योजना शीघ्र ही बनेगी शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

पृष्ठ ३ का शेष

डॉ० विश्वपाल प्राचार्य

कराने की अभिरूचि बढ़ गई थी उसी का परिणाम है कि कई स्नातक अच्छे योग्यविद्वान एवं उपदेशक बनकर आर्य समाज की सेवा कर रहे हैं विश्वपाल आर्य जी ने शास्त्री विद्याभास्कर परीक्षा उत्तीर्ण करके साहित्य विषय में आचार्य परीक्षा अन्तेवासी बनकर उत्तीर्ण की उसमें साहित्य दर्पण एवं काव्य प्रकाश के रस अलंकार प्रकरण को कण्ठस्थ कर लिया था उसके पश्चात् मेरठ विश्वविद्यालय मेरठ से हिन्दी विषय में एम.ए. परीक्षा में स्वर्ण पदक प्राप्त किया था जबकि मेरठ कालेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष की पुत्री भी इसी कक्षा की छात्रा थी पक्षपात भी योग्यता के आगे बोना पड़ गया था जब वि.वि. के कुलपति के समक्ष उत्तर पुस्तिकाओं का पुनर्मूल्यांकन हुआ छात्र को उपस्थित किया गया उत्तर पुस्तिका देखकर और मौखिक श्रवण कर यह पूछना पड़ा था कि आप पूर्व में कहां पढ़े हैं? विश्वपाल आर्य जी का उत्तर था कि मैं गुरूकुल परम्परा का छात्र रहा हूं सभी के मुख से एक साथ निकला था कि भाई यह छात्र हम सभी प्रोफेसरों से भी अधिक योग्यता रखता है इसे ही स्वर्ण पदक पाने का गौरव मिलना चाहिये। यह उन्हें गुरूदेव का अर्जुन बनने का प्रथम पुरस्कार था उसी के आधार पर सिम्भावली डिग्री कालेज में हिन्दी प्रवक्ता पद पर नियुक्ति मिल गई थी फिर पी.एच. डी. भी कालिदा एवं जयशंकर प्रसाद के काव्यों की तुलनात्मक अध्ययन एक शोध पूर्ण विषय पर की सामाजिक जीवन में प्रवेश किया और शिक्षा जगत में क्रमशः बढ़ते हुए प्रचार्य पद को भी सुशोभित किया जिसका प्रयोग उत्तरोत्तर संस्था की प्रगति देखते ही बनती है मुख्य द्वार उनके कार्यालय का सुन्दर लिखा है कई छात्रों को पी.एच.डी. कराई इससे महत्वपूर्ण है कि आर्य समाज को अपनी माता मानकर उनके कार्यक्रमों में जाने में उत्सुक रहा करते थे आर्य समाज हापुड़, आर्यसमाज थापर नगर मेरठ के मंत्री जी तो बोले आप प्रतिमाह आया करो कुछ व्यस्ततायें पारिवारिक समस्याओं के कारण बाधक बनी श्रीमती धर्म पत्नी को पक्षाघात होने से पत्नीव्रत का नियम निभाकर उन्हें स्वस्थ्य किया यह एक आदर्श दम्पत्ति का उदाहरण हैं दोनों पुत्र विवेक और विकास आर्य को योग्य बनाकर पांवों पर खड़ा किया इसमें चौ० शीशपाल सिंह अध्यक्ष इफ्को तथा कु० राहुल ढ़ानाजो प्रबन्धक हैं कालेज की ओर से उन्हें कार्य करने की स्वतन्त्रता एवं सहयोग प्रदान करते रहे उसी का परिणाम था कि विश्वपाल आर्य हापुड़ जिले की शिक्षण संस्थाओं में प्रतिष्ठत होकर सम्मानित प्राचार्यों की श्रेणी में सुशोभित हुए। उनका व्यवहार आबाल वृद्ध के लिए सरलता के रूप में प्रसिद्ध हुआ उन्हें देखकर सभी लोग् प्रभावित होते थे उनके प्रति बच्चों में सम्मान का भाव रहता था कभी कालेज में कोई झगड़ा होने का अवसर नहीं आया हिन्दू, मुस्लिम बालकों को भी समान रूप से व्यवहार करते थे किसी जयन्ती या पर्व पर मुझे भी याद करके बच्चों को प्रेरणा प्रदान करने में प्रसन्नता अनुभव करते थे छात्रों की समस्याओं को सहज भाव से समानधान करना उन्हें गुरूकुलीय जीवन में ही प्राप्त हो गया था मेरे प्रति आपका जो बड़े भाई का स्थान होता है उसे सदैव स्मरण कर सुरक्षित रखते रहे मैं उनकी योग्यता की सर्वत्र प्रशंसा करता था तो उन्हें अच्छा नहीं लगता था मुझे कभी–कभी प्रसन्न में स्वामी एक रसानन्द जी सरस्वती कहकर कुछ आगे बढ़ने की प्रेरणा दिया करते थे जीवन की संघर्ष पूर्ण यात्रा का किस मोड़ पर कब कहां समापन हो जाये कोई आज तक जान नहीं सका है गुरूकुल ततारपुर में प्रबन्ध समिति ने आपको लेखा निरीक्षक पद पर प्रतिष्ठित किया था गुरूकुल पूठ आप प्रायः आकर बच्चों को प्रेरणा प्रदान किया करते थे आपका संस्कृत भाषा पर पूर्व अधिकार था हिन्दी साहित्य के आप धुरी थे जयशंकर प्रसाद की कवितायें जब सुनाते थे चमत्कार सा लगता था हिमादि तुंग भृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती स्वयं प्रभा समुज्जवला स्वतन्त्रता पुकारती ।

प्रशस्त पुण्य पन्थ है बढ़े चलो, बढ़े चलो.....

इस प्रकार चरैवैति, चरैवैति की प्रेरणा छात्रों को दिया करते थे मुझे कहा करते थे भ्राता जी विद्यालय से अवकाश लेते ही आपके आश्रम में आकर बच्चों को तैयार करूंगा–वेद प्रचार कार्य में रूचि लेकर गुरूकुलों में जो सीखा है उसका प्रयोग करूंगा ग्राम–ग्राम, नगर–नगर में देव दयानन्द के दीवानों की फौज तैयार करनी है बचपन में हम गाते थे। आई फौज दयानन्द वाली करो जल्दी रस्ता खाली, अब वह फौज दिखाई नहीं देती उसे तैयार करेगें।

ऐसी वार्ता बैठकर यदा–कदा जब भी मिलते थे होती रहती थी डॉ० वेदपाल जी बड़ौत वालों की प्रशंसा करते हुए कहते थे कि वेपूरे भारत में जाते हैं उन्होंने समय का सदुपयोग किया है अब हम भी करेगें पर किसे पता था कल आयेगा? आपके जीवन की कल कल कब तक रहेगी कल भी था, कल भी है कल, कल–कल में जीवन गया निकला।।

इसी आधार पर सत्येन्द्र शास्त्री का फोन आया पर विश्वास नहीं हुआ उनके पिता नरेन्द्र शास्त्री जी के शान्तियज्ञ में आये थे और बचपन के संस्मरण सुनाये थे वही हमारा अन्तिम मिलन था फोन की सूचना को पुनः पक्का किया पता चला दुर्धटना ट्रैक्टर पलटने से उसके नीचे दब गये और कीर्ति शेष हो गए उनके निवास पर जाकर परिवार को सान्त्वना प्रदान की लोगों को धैर्य दिलाने का सामर्थ्य जुटाया बड़ा विचित्र संयोग था कि बड़ा भाई छोटे भाई को श्रद्धांजलि दें गुरू गोविन्द सिंह के पुत्र जोरावर सिंह फतेहसिंह की तरह आंखें सजल हो गई पर उधर से कोई उत्तर नहीं आ रहा था। सारा क्षेत्र शोकमान था आज अन्तिम विदाई का जन समुद्र उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर रहा था ऐसे तपः पूत वैदिक का जन समुद्र उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर रहा था ऐसे तपः पूत वैदिक विद्वान् का अभाव आर्य समाज के लिए अपूरणीय क्षति है उनकी भावनाओं का आर्य समाज बना सकें। ऐसी शक्ति की प्रार्थना करते हुए गुरूकुल पूठ एवं शिक्षा संस्थाओं की ओर से तथा आर्य मित्र परिवार आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० की ओर से भाई के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि। परिवार के प्रति संवेदना एवं धैर्य की प्रार्थना करता हूँ

"गतोऽस्तमर्कः" बौद्धदर्शन और सत्यार्थ प्रकाश

–डॉ0 महावीर मीमांसक

१. ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के १२वें समुल्लास में बौद्धों की माध्यमिक आदि चार शाखाओं में विभक्त होने के कारण को बतलाते हुए उदाहरण दिया है कि जैसे सूर्य के अस्त होने में अलग–अलग वर्ग के व्यक्ति बुद्धिभेद से अलग–अलग चेष्टा करते हैं, वैसे आचार्य बुद्ध को सुनने वाले पुरूषों और शिष्यों के बुद्धिभेद से चार शाखाएं हो गई (ये शब्द लेखक के हैं जो ऋषि दयानन्द के अभिप्राय के अनुसार हैं)। वस्तुतः यह निदर्शन ऋषि दयानन्द के अभिप्राय के अनुसार हैं) वस्तुतः यह निदर्शन ऋषि दयानन्द ने "सर्वदर्शन संग्रह" पुस्तक के बौद्धदर्शन प्रसंग से लिया है, जो निम्न प्रकार से है: "यथा गतोऽस्तमर्कः" इत्युक्ते जार–चौर– अनूचान– आदयः स्वेष्टानुसारेण अभिसरण–, परस्वहरण, सदाचरण आदिसमयं बुध्यन्ते"। ऋषि दयानन्द का इस उद्धरण का हिन्दी में रूपान्तरण प्रथमप्रति या मूलप्रति में अधिक निकट है, केवल एक ही शब्द का अन्तर है, वह है कि सर्वदर्शनसंग्रहकार के मूलशब्द "सदाचरण" के स्थान पर ऋषि ने "सत्य आचरण" शब्द का प्रयोग किया है, जबकि मुद्रणप्रति तथा द्वितीय संस्करण में "सत्यभाषण आदि श्रेष्ठ कर्म" शब्दों का प्रयोग है और "चौर चौरी कर्म" तथा "पूर्ण विद्वान्" का "पूर्ण" शब्द छूट गया है।

२. डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी ने परोपकारी कके अक्टूबर (प्रथम) २०१२ के अंक में अपने लेख "तीनों संस्करणों..." में सर्वदर्शन संग्रह" के इस वचन को बौद्धदर्शन का माना है। किन्तु यह बचन बौद्धदर्शन का नहीं है। "सर्वदर्शन का माना है। किन्तु यह वचन बौद्धदर्शन का नहीं है। "सर्वदर्शन संग्रह" से स्पष्ट है। इस "सर्वदर्शन संग्रह" ग्रन्थ में छवों वैदिक दर्शन–न्याय, वैशेषिक, सांख्य, वेदान्त आदि तथा नास्तिक दर्शन–चार्वाक, बौद्ध, जैन आदि का संग्रह है, जो ग्रन्थ के लेखक ने प्रत्येक दर्शन के सिद्धान्तों को संग्रह करके सम्बद्ध दर्शन की कुछ मूल भाषा या शब्दावली और कुछ अपनी भाषा का प्रयोग करके लिखा है। उपर्युक्त उद्धरण भी बौद्ध–दर्शनों के किये संग्रह के प्रकरण–प्रसड का है, जो किसी भी मूल बौद्ध–दर्शन का नहीं है। मूल बौद्ध दार्शनिक दिड्नाग, धर्मकीर्ति, नागार्जुन आदि हैं, जिन्होंने अपने मूल दार्शनिक, गन्थों में इस प्रकार का उद्धरण कहीं नहीं दिया है। सर्वदर्शनसंग्रहकार का यह डद्धरण तो किसी भी मूल बौद्धदर्शन में नहीं है।

३. सर्वदर्शनसंग्रहकार ने भी यह उद्धरण बौद्धदर्शन की चार शाखाओं में से किसी भी बौद्ध दार्शनिक शाखा के सिद्धान्तों का वर्णन करने के लिये नहीं दिया है, अपितु यह खिलाने के लिए दिया है कि बौद्धों की भिन्न–भिन्न शाखायें कैसे बनी? अतः स्पष्ट है कि यह वचन बौद्ध दर्शन का किसी भी प्रकार से सैद्धान्तिक सार–संग्रह नहीं है। अतः यह किसी भी बौद्ध दर्शन का संस्कृत अंश नहीं है, अपितु सर्वदर्शनसंग्रहकार की अपनी भाषा का अंश है। ऋषि ने बौद्धों के दार्शनिक सार को इसी भाव से लिखा है कि सामान्य जन भी समझ लें।

४. बौद्धों के किसी भी मूल दार्शनिक ग्रन्थ में "सदाचरण" शब्द का प्रयोग भी नहीं है, क्योंकि उन गन्थों में यह कहीं नहीं बतलाया कि बौद्धों की चार शाखायें कैसे बनीं। अतः "गतोऽस्तमर्कः" का निदर्शन किसी भी मूल बौद्ध दार्शनिक ग्रन्थ में नहीं है। यह शब्द मुझे किसी मूल बौद्ध दार्शनिक ग्रन्थ में नहीं है। यह शब्द मुझे किसी मूल बौद्ध दार्शनिक ग्रन्थ में नहीं है। यह शब्द मुझे किसी मूल बौद्ध–दर्शन में नहीं मिला। यदि किसी को मिले तो कृपया पूरा पता देकर बतलायें।

५. वस्तुतः "गतोऽस्तमर्कः" उद्धरण ध्वनि–काव्य का है। किसी भी भाषा के साहित्य में शब्द की अर्थ प्रकट करने की शक्ति अभिधा के अतिरिक्त लक्षणा और व्यजंना (ध्वनि) भी मानी गई है। संस्कृत साहित्य शास्त्र के ग्रन्थों यथा साहित्य–दर्पण, काव्य–मीमांसा, ध्वन्यालोक आदि में इसका बड़े विस्तार से वर्णन है। एक शब्द के द्वारा भिन्न–भिन्न प्रसंगों में अनेक अर्थों की अभिव्यक्ति साहित्यिकों का सिद्धान्त है। सर्वदर्शनसंग्रहकार ने वहीं से यह "गतोऽस्तमर्कः" का निदर्शन लिया है। यह सिद्धान्त दर्शन का नहीं हो सकता, क्योंकि दर्शन में प्रत्येक शब्द निश्चित होता है, जो निश्चित अर्थ को अभिव्यक्ति नहीं कर सकता, क्योंकि इससे दर्शनशास्त्र का सिद्धान्त एक निश्चित अभिधेय को प्रकट नहीं कर सकता, जिससे समूचा दर्शनशास्त्र का सिद्धान्त व्याकुल हो जायेगा, गड़बड़ा जायेगा, जबकि साहित्यिकों को यही अभीष्ट है कि उनके साहित्य में एक शब्द प्रसंगवश अनेक अर्थों को प्रकट करे, यही साहित्य के सौन्दर्य की अभिवृद्धि है। अतः सर्वदर्शनसंग्रहकार ने वहीं से यह 'गतोऽस्तमर्कः" का निदर्शन लिया है। यह सिद्धान्त दर्शन का नहीं हो सकता, क्योंकि दर्शन में प्रत्येक शब्द निश्चित होता है, जो निश्चित अर्थ को प्रस्तुत करता है। दर्शनशास्त्र में एक शब्द अनेक अर्थों की अभिव्यक्ति नहीं कर सकता, क्योंकि इससे दर्शनशास्त्र का सिद्धान्त एक निश्चित अभिधेय को प्रकट नहीं कर सकता, जिससे समूचा दर्शनशास्त्र का सिद्धान्त व्याकुल हो जायेगा, गडबड़ा जायेगा, जबकि साहित्यिकों को यही अभीष्ट है कि उनके साहित्य में एक शब्द प्रसंगवश अनेक अर्थों को प्रकट करे, यही साहित्य के सौन्दर्य की अभिवृद्धि है। अतः सर्वदर्शनसंग्रहकार ने यह उक्ति अपने अभिधेय को बौद्धों की अनेक शाखाओं के कारण को स्पष्ट करने के लिए साहित्यशास्त्र से ली है, यह वचन दर्शनशास्त्र का नहीं है, अपितु ध्वनिकाव्य का आदर्श वाक्य है।

६. "सदाचरण" शब्द पारिभाषिक नहीं है। किसी भी बौद्धदर्शन (मौलिक) में इसकी परिभाषा नहीं दी है। पारिभाषिक शब्द (तकनीकी शब्द) को बदला नहीं जा सकता और न ही उसकी भाषा को बदला जा सकता है। यह "परिगणक" शब्द है जिसमें स्नान, शौच, वन्दन के अतिरिक्त भजन, सन्ध्या, ध्यान आदि सूर्यास्त के बाद किये जाने वाले विद्वानों के कार्यों को परिगणित किया जा सकता है। ऋषि दयानन्द यह तथ्य भी भली–भांति जानते थे कि यह पारिभाषिक शब्द नहीं, क्योंकि परिभाषा को दर्शनशास्त्र में बदला नहीं जा सकता। इसीलिए ऋषि ने 'सदाचरण' शब्द के स्थान पर 'सत्य आचरण' (मूलप्रति) शब्द का प्रयोग किया। 'सदाचरण' में जो कार्य परिगणित किये जा सकते हैं, वे ही कार्य 'सत्य आचरण' में भी परिगणित किये जा सकते हैं। अन्यथा शाब्दिक अर्थ तो दोनों शब्दों शब्दों का "सदाचरण सज्जनों का आचरण' और "सत्य आचरण सच्च का, सच्चाई का आचरण" क्रमशः बनते हैं।

७. "सर्वदर्शनसंग्रह" में इस वचन में दो बार "आदयः" और "आदि समय" आया है, जिसका अभिप्राय है इसमें और भी उदाहरण जोड़े जा सकते हैं। यथा कृषक या श्रमिक सूर्य–अस्त से खेत में काम छोड़कर घर जाने का समय समझते हैं। अतः यह परिगणना कितनी हो सकती है? जितने लोगों के प्रसंग उतनी अधिक परिगणना, यही सर्वदर्शनसंग्रहकार का अभिप्राय है।

८. डॉ० सुरेन्द्र कुमार के "दिनचर्या का निर्धारण" का आरोप उन सभी विद्वान् सम्पादकों पर भी लगता है, जिन्होंने ३६वें संस्करण तक सभी संस्करणों का सम्पादन द्वितीय–संस्करण के आधार पर करके " सत्यभाषण आदि श्रेष्ठ कर्म" पाठ रखा। यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए। इसका भी समाधान है कि जैसे परिगणन से 'सदाचरण' और 'सत्य–आचरण' शब्दों के शाब्दिक अर्थ का निवारण हो गया, वैसे ही "सत्य–भाषण आदि श्रेष्ठ कर्म" का भी परिगणन हो जायेगा और "सत्य–भाषण' शब्द के शाब्दिक अर्थ की निवृत्ति हो जायेगी, लेखक के अभिप्राय को स्पष्ट संगत करने के लिए "व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिर्न हि सन्देहादलक्षणम्" परिभाषा यहां पर भी चरितार्थ हो सकती है।

मेरी समझ के अनुसार प्रथम प्रति (मूलप्रति) का पाठ अधिक ग्राह्य है, क्योंकि इससे "चौर चौरी कर्म" एक उदाहरण और जुड़ जाता है, जो "गतोऽस्तमर्कः" को और विशद कर देता है। इसे ऋषि दयानन्द और द्वितीय संस्करण पर दोषारोपण बिलकुल न समझा जाये। द्वितीय संस्करण तो मूलाधार है। वस्तुतः सत्यार्थप्रकाश का प्रामाणिक शुद्धतम सर्वमान्य एकरूप तो प्रथमप्रति, भ्रुणप्रति तथा द्वितीय संस्करण के आधार पर ही निर्धारित हो सकता है। यह कार्य एक निष्पक्ष विद्ववद् सभा का आयोजन करके जितनी शीघ्र हो सके, उतना अच्छा है।

धर्म निरपेक्षता का यथार्थ

–सत्येन्द्र सिंह आर्य

भारत वर्ष का अगस्त १९४७ में जब अंग्रेजी शासन से मुक्ति मिली तो इस दुःखद त्रासदी के साथि मिली कि देश का विभाजन हो गया। पाकिस्तान का गठन तो हुआ ही मजहबी उन्माद के कारण था, इसलिए वहाँ के शासकों ने पाकिस्तान को इस्लामी राष्ट्र घोषित कर दिया। तथापि जिस द्विराष्ट्र के सिद्धान्त के आधार पर जिन्ना ने इस्लाम के मानने वालों के लिए पाकिस्तान नाम से अलग राष्ट्र बनया था , उसे एक बनाये रखने में इस्लाम ने कोई मदद नहीं की। सन् १९७१ में पूर्वी पाकिस्तान ने अपने को पाकिस्तान से पृथक् करते हुए स्वंत्र 'बांगलदेश' घोषित कर दिया। दुनिया के नक्शे पर वह आज एक यथार्थ है। और वह भी इस्लामी राष्ट्र ही है।

भारत के राजनेताओं ने आजादी मिलते ही शेष बचे हुए राष्ट्र को धर्म निरपेक्ष राज्य घोषित किया। अलग मुसलिम राष्ट्र (पाकिस्तान) बन जाने के बावजूद काफी बड़ी संख्या (करोड़ों) में मुसलिम मतावलम्बी भारत में ही रूक गए। वे सब यहाँ पर अन्य राष्ट्रवासियों की भांति रह रहे हैं, फुल–फल रहे हैं और आज भारत में मुसलिम आबादी पाकिस्तान में रहे गए थे, उनमें से अधिकांश को या तो मार काट दिया या उन्हें बलात् मुसलमान बना दिया गया। अब भी जो थोड़े बहुत बचे हैं, वे वहाँ कोई सम्मानित जीवन नहीं जी रहे हैं। १९४७ में आजादी के बाद जितने हिन्दु पाकिस्तान में थे, अब वहा उनकी आबादी तब से आधी, तिहाई या चौथाई–कुछ भी नहीं है। हिन्दुओं की कौन कहे, उत्तर प्रदेश, बिहार आदि राज्यों से विभाजन के समय जो मुसलमान वहां गये थे वे, परवेज मुशर्रफ जैसे कुछ एक अपवादों को छोड़कर, आज भी वहां पर मोहाजिर ही है और जलालत की जिन्दगी जी रहे हैं। मुसलिम लीवियों ने इस्लाम के अनुसार राज करने के जिस संकल्प के साथ पाकिस्तान प्राप्त किया था, वे वहां उसके अनुसार चलाने का प्रयास कर रहे हैं। मानवता की या मानवाधिकार की दृष्टि से यह उचित है या नहीं –यह अलग प्रश्न हैं।

धर्मनिरपेक्ष शब्द का प्रयोग–भारत में में धर्म निरपेक्षता को यहाँ के संविधान में स्थान दिया गया। इसमें दुःखद बात यह रही कि राष्ट्र के कर्णधारों ने 'धर्म' शब्द को अंग्रेजी के 'रिजीजन' और उर्दू के 'मजहब' शब्द का समानार्थी मान लिया। इस्लाम, ईसाइयता, पारसी, यहूदी आदि मत जब दुनिया में कहीं प्रचलित भी नहीं हुए थे.. धर्म तो तब भी मौजूद था। धर्म तो उन मानवी मूल्यों (गुणों) का नाम है, जो सार्वभौमिक हैं, सार्वकालिक हैं, सृष्टि केक आरम्भ से विद्यमान हैं और उनकी सदैव आवश्यकता रही है, आज भी है और आगे भी रहेगी। धृति, क्षमा, दम (इन्द्रियों को बाह्य वषियों में न जाने देना) अस्तेय (चोरी न करना), शौच (शुचिता), इन्द्रिय निग्रह (संयम), धी (बुद्धि), विद्या, सत्य और अक्रोध–ये धर्म के लक्षण हैं। इनमें से कौन सा गुण है जिसकी मानव जीवन में और व्यवस्था में आवश्यकता न हो। यदि राष्ट्र के तत्कालीन खेतनहार 'धर्म' शब्द का ठीक–ठीक अर्थ जानते और उसकी अवधारणा को समझते तो 'धर्म निरपेक्ष' शब्द को प्रयोग करने की उन्हें कतई आवश्यकता न होती। नासमझी के कारण इस शब्द का प्रयोग हुआ। प्रयोगकर्ताओं द्वारा उस समय इसका अभिप्राय यह दर्शाया गया कि भारत में रहने वाले सभी मतावलम्बियों (उनके अनुसार सभी धर्मों के मानने वालों) के साथ एक समान व्यवहार होगा। मत–पंथ–सम्प्रदाय के कारण किसी के साथ भेद–भाव नहीं किया। जो भी हम मुनि जी जैसे बहुपठित को यह तो बता ही दें कि वेदों में क्लोन जैसी आधुनिक विद्या का संकेत ही नहीं स्पष्ट वर्णन है। श्रद्धेय रामनाथ जी वेदालंकार के ग्रन्थ 'ऋग्वेद–ज्योति' की भूमिका के पृष्ठ २० पर वर्णन आता है– 'निश्चर्णाऋभवो गामपिंशत' (ऋ. १.१६०८) अर्थात् ऋभुओं ने चमड़े से गाय को बनाया। देखना यह है कि महर्षि दयानन्द जी ने भी यही अर्थ किया है। उस काल में यह कल्पना करना असम्भव कोटि तक कठिन होगा कि किसी प्राणी के शरीर का एक टिश्यू लेकर किन्हीं वैज्ञानिक प्रक्रियाओं से नया प्राणी बनाया जा सकता है, इसलिये उन्होंने लक्षणावृति का आश्रय लेकर कृशकाय गाय को पुनः पुष्ट करने की ऊहा की, लेकिन शब्दार्थ' स्पष्टतः ऋभवः–ऋतुओं ने, चर्मणः से, गाम्–गाय को, निःअपिशंत–बनाया' की घोषणा करता है।

मुनि जी की जिज्ञासा तो हमने शान्त कर दी, अब यह उन पर निभर करता है कि वे वेद को सब सत्य विद्याओं का मानते हैं या नहीं। वैसे जो मनुष्य वेद को ईश्वरीय ज्ञान ही नहीं मानता वह वेद को सब सत्य–विद्याओं का पुस्तक कभी नहीं मान सकता। मुझे तो आशंका है कि निकट भविश्य में वे ईश्वर के अस्तित्व पर उसकी कर्मफल व्यवस्था पर तथा त्रैतवाद पर भी तर्क की तलवार लेकर टूट पड़ने वाले हैं। जब मनुष्य के मस्तिष्क का पुर्जा ढीला हो जाता है तो वह ज्वर ग्रस्त की तरह कुछ भी बड़बड़ाने लगता है। जिसके लिए वेद अपौरूषेय नहीं, प्रामाणिक नहीं उसके लिए वेद वर्णित कोई भी सिद्धान्त व मान्यताएं सत्य व प्रामाणिक क्यों कर होंगे? किस मुंह से ये लोग त्रैतवाद जैसे सिद्धान्तों की सत्यता व प्रामाणिकता प्रकट करेंगे? आश्चर्य तो तब होता है जबकि केईस्वनामधन्य विद्वान् या पाठक ऐसे नस्तिक–अभिमान के पक्ष–पोषण में लम्बे–लम्बे पत्र लिख भेजते हैं। वे नहीं जानते कि वैदिक मर्यादा के अनुसार कृत, कारित व अनुमोदित–तीनों कर्म समान रूप से फल उत्पन्न करते हैं। वे घर बैठकर अनजाने में ही इस पाप का एक अंश अपने खाते में डाल लेते हैं। ऐसे लोगों के लिए ही यह कहा है–

'अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः, स्वयं धीराः पण्डितम्मन्यमानः।
जघन्यमानाः परियन्ति मूढ़ा, अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः।।

प्रयास करो तमाशा मत देखो

एक गाँव में आग लग गई। आग बढ़ती जा रही थी और गाँव वाले अपनी जान बचाने हेतु इधर-उधर भाग रहे थे। एक चिड़िया ने यह दृश्य देखा और अपनी चोंच में पानी भरकर आग बुझाने का प्रयास करने लगी। वो बार-बार अपनी चोंच में पानी लाती और आग पर डालती। जब गाँव वालों ने चिड़िया को आग पर पानी डालते देखा तो उनमें भी जोश आ गया और बोले कि अगर ये चिड़िया प्रयास कर रही है तो हम क्यों नहीं कर सकते। सबने प्रयास किया और आग बुझ गई। ये सब एक कौआ देख रहा था। उसने चिड़िया से कहा कि तेरे पानी डालने से कुछ होना तो था नहीं, फिर तू ये क्यों कर रही थी? चिड़िया बोली, मेरे पानी डालने से कुछ हुआ या नहीं हुआ लेकिन मुझे गर्व है कि जब भी इस आग की बात होगी तो मेरी गिनती आग बुझाने वालों में होगी तेरी तरह तमाशा देखने वालों में नहीं।

श्रद्धांजलि एवं शोक संवेदना

१. आचार्य डॉ० विश्वपाल आर्य, प्रचार्य किसान पी०जी० कालेज, सिम्भावली , हापुड़ उ०प्र०।

आर्य जगत के उदीयमान युवा विद्वान् किला परीक्षित गढ़ जिला मेरठ (उ०प्र०) में २० फरवरी को सायंकाल एक दुर्घटना में उनका देहावसान हो गया वे सिम्भावली डिग्री कालेज में हिन्दी प्रवक्ता एवं प्रचार्य पद पर रहे हैं। उनकी शोक सभा एवं शान्ति गुरूकुल पूठ गढ़मुक्तेश्वर हापुड़, में किया गया।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती संचालक ने बाताया कि बचपन से ही वे उनके साथी रहे हैं छोटे भाई की तरह उन्हे सम्भाला एवं अच्छे संस्कारों से युक्त किया है उनका अभाव आर्य जगत के लिए एवं गुरूकुल पूठ के लिए अपूरणीय क्षति है।

उनके परिवार में शान्ति यज्ञ स्वामी अखिलानन्द सरस्वती ने कराया वहाँ चौ० शीशपाल सिंह चौ० कु० राहुल ढ़ाना, प्रि० महावीर सिंह जी भी व्रत पालसिंह, प्रधानाचार्य इण्टरकालेज, गजेन्द्र सिंह प्रचार्य डिग्री कालेज, गढ़मुक्तेश्वर, क्षेत्रीय सांसद एवं विधायक भी उपस्थित रहे गुरूकुल ततारपुर के प्राचार्य प्रेमपाल शास्त्री ने भी अपनी श्रद्धांजली अर्पित की जिन संस्थाओं ने अपनी श्राद्धांजली भेजी हैं उसमें–

१. कृषक डिग्री कालेज, इण्टरकालेज तथा समिति सिम्भावली।

२. श्री महेन्द्र सिंह डिग्री कालेज, गढ़मुक्तेश्वर।

३. गुरूकुल म०वि० पूठ–गढ़, हापुड़।

४. गुरूकुल म०दि० ततारपुर, हापुड़।

५. आर्य समाज, खैय्या, दतियाना, सिम्भावली, गढ़ मुक्तेश्वर, हापुड़। किला परीक्षितगढ़, भगवानपुर वांगर, खजूरी, भावनाकलां शाहजहांपुर, किठौर, श्यामपुर जट्ट, अटौला आदि–आदि।

–प्रदीप शास्त्री
गुरूकुल पूठ–हापुड़

भोपाल गैस कांड में जब बच गया दैनिक हवन करने वाला परिवार

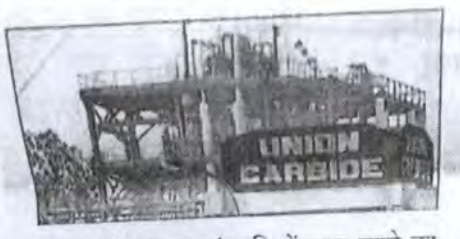

भारत की सनातन संस्कृति में हवन करने का बहुत महत्व है। आदिकाल से कहा जा रहा है कि यज्ञ की अग्नि में विभिन्न औषधियों की आहुतियां देने से वातावरण शुद्ध होता है और हवा में मौजूद जहरीले तत्व भी खत्म होते हैं।

आश्चर्यजनक रूप से यह तथ्य उस समय सही साबित हुआ, जब 2-3 दिसंबर की रात भोपाल में भयानक गैस कांड हुआ। अमेरिकी कारखाने यूनियन कार्बाइड से मिथाइल आइसो सायनाइड (मिक) गैस रिसी और चंद घंटों में हजारों निर्दोष लोग मौत की नींद सो गए। कई उस गैस की चपेट में आने से स्थायी रूप से विकलांग हो गए, वहीं फैक्ट्री से काफी दूर रहने वाले कई लोग भी इसके कुप्रभाव से बच नहीं पाए।

मगर आश्चर्य यह कि कारखाने से महज एक मील दूरी पर रहने वाले दो परिवारों का प्रत्येक सदस्य जानलेवा गैस के कुप्रभाव से बच गया। ये थे सोहनलाल कुशवाह और एमएल राठौर के परिवार। जबकि कुशवाह और राठौर परिवार के आसपास के घरों में अधिकांश लोग या तो मारे गए थे या बुरी तरह प्रभावित हुए थे। जब दोनों परिवारों के बचने का कारण तलाशा गया तो पता चला कि उनके घरों में प्रतिदिन गाय के गोबर, घी, लकड़ी व औषधियों से हवन किया जाता था। हवन से निकला धुआं रोग निरोधक यानी एंटीडोट होता है और ये बैक्टीरिया को मारकर वातावरण को शुद्ध करता है।

बाद में इन दो परिवारों के बचने की घटना प्रतिष्ठित अखबारों में प्रकाशित हुई और इस पर भारत से लेकर अमेरिका तक में खूब चर्चा हुई।

अपील -अभ्यर्थना

गुरूकुल महाविद्यालय पूठ (पुष्पावती) निकट गढ़मुक्तेश्वर गंगा किनारे पर शान्त एकान्त स्थान पर पिछले २६ वर्षों से संचालित है यह प्राचीन तीर्थ स्थली एवं ऐतिहासिक स्थली भी हैं गुरू द्रोणाचार्य ने यहां कौरव–पाण्डवों को धनुर्विद्या सिखाई थी तथा जब भीम को दुर्योधन द्वारा विषदेकर गंगा में डाल दिया था तब श्री कृष्ण जी उसके स्वास्थ्य काा समाचार लेने पूठ आये थे एकलव्य ने गुरूदक्षिणा भी यही पर दी थी।

ऐसे स्थान पर गुरूकुल का संचालन कर ब्रह्मचारी तैयार किये जा रहे हैं तथा एक आदर्श गौशाला भी चल रही है ऐसी संस्थाऐं आप जैसे दानी महानुभावों के सहयोग द्वारा ही चल पाती हैं भवन जो बनाये गए थे उनकी छतें एवं फर्श भी अर्थाभाव में नहीं बन पये थे उसका जीर्णोद्वार तथा नवीन कक्षों का भी निर्माण होना अपेक्षित है।

आपके पास अपील रूपी झोली लेकर आह्वान करता हूं कि आप स्वयं तथा अपनी संस्था अथवा अपने मिलने वालों से आर्थिक सहयोग कराकर इस इतिहास की सुरक्षा में सौभाग्यशाली बनेनें में ११ हजार अथवा इससे ऊपर दानदाताओं के नाम का पत्थर (शिलापट्ट) पर नाम लम्बे समय तक प्रेरणा प्रदान करता रहेगा। अपने पूर्वजों अथवा प्रियजनों के नाम से भी सामथ्यनिु स्तर कक्ष निर्माण करायेगें तो हमारा सौभाग्य होगा।

मैं सभा कार्यों में व्यस्त रहता हूं अतः इस निवेदन के रूप में आपके पास आया हूं ऐसामानकर मुझे इस कार्य में जो भी सहयोग प्रदान करेंगे वह महर्षि दयानन्द सरस्वती के सपनों को साकार करने में प्राप्त होगा। मैं आपके सहयोग की प्रतीक्षा करूंगा। आप सहयोग नकद धनादि ड्राफ्ट अथवा चेक के रूप में प्रदान कर सकते हैं।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

संचालक–गुरूकुलपूठ

मंत्री–आर्यप्रतिनिधि सभा, उ०प्र०

मो० : ६८३७४०२१६२, ६४११०२६७७५

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा मिर्जापुर–चुनाव

श्री आद्या प्रसाद सिंह –प्रधान
श्री अमरनाथ सिंह–मंत्री
श्री झग्गड़ सिंह आर्य– कोषाध्यक्ष

गुरूकुल झज्जर, हरयाणा का 102 वाँ सम्मेलन

शिवरात्रि के पर्व पर प्रतिवर्ष वार्षिक सम्मेलन का आयोजन किया जाता है पूरे प्रदेश और देश से विद्वान्, सन्यासी एवं आर्य भजनोपदेशक पधारते हैं भव्य कार्यक्रम होता। पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती स्मृति सम्मान पुरस्कार तीन महानुभावों को प्रदान किये जाते हैं – १. ब्रह्मचारी सम्मान, गुरूकुल मंझावली के आचार्य जय कुमार जी को प्रदान किया गया। आर्य भजनो पदेशक सम्मान श्री नरदेव आर्य भरतपुर को प्रदान किया गया तथा आर्य विद्वान् सम्मान वैदिक विद्वान् डॉ० महावीर सिंह मीमांसक जी दिल्ली को प्रदान किया गया। सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती भी इसके साक्षी रहे आचार्य विजयपाल जी का पुरूषार्थ प्रशंसनीय है। ब्रह्मचारियों को व्यायाम प्रदर्शन विशेष रूप से दर्शनीय होता है यज्ञशाला में यजुर्वेद एवं आचार्य विजयपाल जी को हार्दिक बधाई।

–संवाददाता आर्यमित्र परिवार

श्रद्धांजलि सभा

१. जिला आर्य प्रतिनिधि सभा हापुड़ के अध्यक्ष–विकास आर्य के पिता श्री रामऔतार जी आर्य अग्रवाल के निधन पर आर्य समाज मन्दिर हापुड़ में २२ फरवरी को मध्यान् २ बजे से शोक सभा का आयोजन सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में किया गया। संयोजन– आनन्द आर्य प्रधान आर्य समाज ने किया सभा में क्षेत्रीय सांसद श्री राजेन्द्र अग्रवाल, नगर चेयर मैन प्रफुल्ल सारस्वत, आ० प्रेमपाल शास्त्री, मा० ज्ञानेन्द्र सिंह अध्यक्ष जिला सभा गा० गाजिबाद एवं उपमन्त्री सभा, तेजपाल सिंह आर्य, स.पु.अ.सभा, अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष महेन्द्र सिंह आर्य, महामंत्री दिल्ली, अनिल आर्य गढ़, अमर पाल सिंह आर्य, महेश व सुरेन्द्र आर्य, बहादुरगढ़, जगवीर सिंह उपमन्त्री जिला, ऋषिपाल सिंह आर्य ततारपुर, मुरादाबाद, जितेन्द्र सिंह खैय्या, अशोक आर्य मन्त्री जिला, पिलखुवा, रवीन्द्र उत्साही, आर्य समाज हापुड़ के समस्त अधिकारी, निरजंन सिंह आर्य बछलौता, भारतभूषण विवेक ज्वाला, के अलावा धर्मेन्द्र शास्त्री एवं अंकित उपाध्याय का संगीत हुआ माताओं की संख्या भी काफी रही नगर के सभी सम्भ्रान्त व्यक्तिगण तथा समाजसेवी लोगभारी संख्या में उपस्थित रहे मन्दिर प्रांगण खचाखच भरा हुआ था। अन्त में स्वामी जी ने सामूहिक प्रार्थना एवं मौन धारण कराया सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह आर्य ने भी अपनी शोक संवेदना व्यक्त की है। आर्य मित्र परिवार एवं आर्य प्रतिनिधिसभा की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि गुरूकुल पूठ में भी शान्ति यज्ञ सम्पन्न किया गया। आचार्य राजीव प्रधान आर्य समाज गुरूकुल पूठ एवं मन्त्री दिनेश आचार्य ने आहुतियां प्रदान की।

–प्रमोद कुमार आर्य
अधिष्ठाता–वेद प्रचार जिला, हापुड़

२. आर्य समाज अलीनगर, जिला–अमरोहा, प्रधान सुखवीर सिंह आर्य के परिवार में निगम आर्य की मृत्यु एक दुर्घटना, में हो गई गुरूकुल पूठ परिवार एवं आर्यमित्र परिवार तथा जिला सभा अमरोहा की ओर से परिवार को शोक संवेदना देने सभा मन्त्री स्वामी जी घर पर गए और सदस्यों को धैर्य प्रदान कराया।

–ओमपाल सिंह आर्य प्रधान–जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, अमरोहा

ऋषि बोध पर्व पर प्रचार

१. आर्य समाज कपासी जिला अमरोहा में १६ फरवरी को प्रातः यज्ञ एवं सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती का वेद प्रवचन हुआ, आदर्श गृहस्थी के लक्षण बताये तथा हर्षिता आर्या के जन्मदिन पर आशीर्वाद दिया प्रधान श्री ठाकुर सिंह आर्य ने सभी का धन्यवाद किया। दिनेश आचार्य, राजीव प्राचार्य, प्रदीप शास्त्री, रणजीत सिंह आचार्य सहित आस–पास के ग्रामों के आर्य लोग उपस्थित रहे चौ० रवीन्द्र सिंह जी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

२. आर्य समाज हापुड़ में ऋषि बोध पर्व मनाया गया।

३. गुरूकुल म०वि० ततारपुर का वार्षिक सम्मेलन ऋषि बोधपर्व के रूप में मनाया गया।

४. आर्य समाज स्याना, बुलन्दशहर, आर्यसमाज, खुर्जा बुलन्दशहर, आर्य समाज बहादुगढ़, हापुड़ में भी ऋषि बोधपर्व मनाया गया।

–दिनेश आचार्य–गुरूकुल पूठ

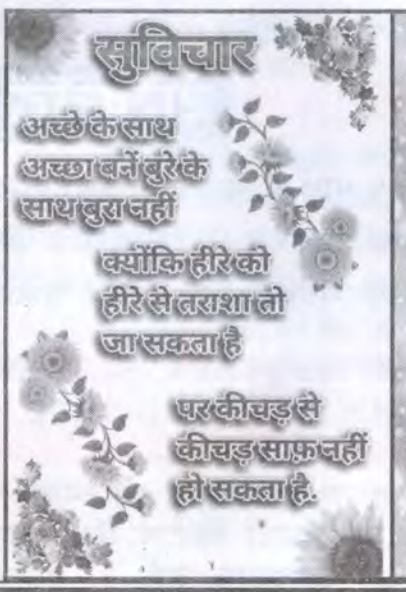

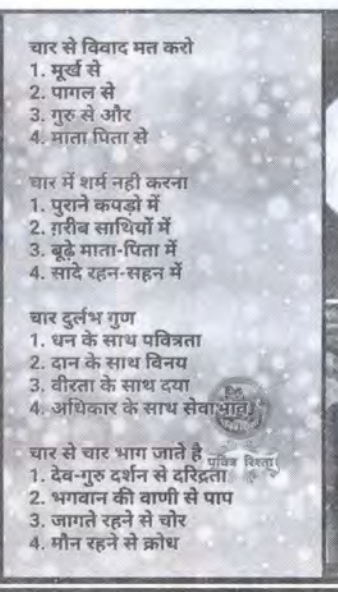

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भव... -मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०९... ...त्री- ०९८३७४०२१९२, व्यवस्थापक- ९३२०९२२२०५
ई-मेल : ... ...36@gmail.com

सेवा में,
....
....

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के चिन्तन शिविर हरिद्वार की झलकियां

ओ३म्

गुरूकुल महाविद्यालय पूठ (पुष्पावती) गढ़मुक्तेश्वर (हापुड़) का वार्षिक महासम्मेलन समारोह

18, 19 मार्च, 2018 रविवार, सोमवार

प्रिय महोदय,

आपके प्रिय गुरूकुल पूठ का वार्षिक महासम्मेलन दिनांक १८, १९ मार्च २०१८ को कुलभूमि में उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। जिनमें आर्य जगत के उच्च कोटि के विद्वान् महात्मा, नेता एवं भजनोपदेशक पधार रहें हैं।

अतः आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपने इष्ट मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में दर्शन देकर धर्म लाभ उठावें।

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

५ मार्च से श्री स्वामी प्रणवानन्द जी की अध्यक्षता में यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न होगा। इसके संयोजक कुलदीप आचार्य जी रहेंगे। यज्ञ की पूर्णाहुति १९ मार्च को प्रातः १०.०० बजे होगी। यजमान बनने के इच्छुक सज्जन सम्पर्क करें।

संचालक- स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ● मो0 : 9837402192

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।